PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 2, ISSUE 3

विदेशों में आर्यसमाज की पत्र – पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं उनका विवरण व वर्तमान परिपेक्ष्य

डॉ. राजकमल सरोहा
प्रवक्ता–राजनीति विज्ञान
एम0जी0एम0 डिग्री कॉलेज, सम्भल
उत्तर प्रदेश भारत

प्रस्तावना:

आर्यसमाज की स्थापना के समय 1875 ई0 में दे"ा परतंत्र था। दे"ावासियों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अनगिनत रणबाकुरों को स्वतंत्रता संग्राम की बलिवेदी पर अर्पित कर दिया। परन्तु दुर्भाग्यवस यह यज्ञकुण्ड धधककर न रह सका, बल्कि यह सुलगकर रह गया। यह स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु यज्ञकुण्ड की अग्नि विभिन्न निरोधकों द्वारा दवा दी गई, परन्तु लाख प्रयास के बावजूद कुछ चिंगारियाँ शेष रह गईं और सुषुप्त रहकर अनुकूल परिस्थितियों की तला"ा में अवसर का इंतजार करने लगीं। अवसर मिला, स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे व्यक्तित्व ने छुपी व दबी चिंगारियों को भड़काया और दे"ा–विदे"ा में आर्यसमाज की पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से सम्पूर्ण विदे"ाी साम्राज्य को खाक करने में महति योगदान दिया।

आर्यसमाज व स्वामी दयानन्द सरस्वती को व्यापक जन समर्थन हासिल हुआ और लगभग पूरा भारत वर्ष अनेक नेतृत्व में चल पड़ा, जो दे"ा प्रेमी जहाँ था, वहीं से अपने दे"ा की मुक्ति के लिए प्रयासरत था। पत्र–पत्रिकाओं मे हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू भाषाओं मे भी अनेक पत्र–पत्रिकाऐं निकालीं।

विदे"ाों में भी आर्यसमाज की विचारधारा से जुड़े लोगों ने दे"ा की स्वतन्त्रता के लिए प्रयास किया। विभिन्न दे"ाों जैसे मॉरी"ास, दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका, सूरीनाम, फिजी, त्रिनिडाड, गुयाना, मोजाम्बिक व यूरोप के कई दे"ाों जैसे पोलैण्ड, हंगरी, फ्रांस, इंग्लैण्ड जर्मनी और एि"ायाई दे"ाों जैसे– जापान, वर्मा, श्रीलंका, इण्डोनेसिया आदि दे"ाों में बसे भारतीय हमे"ाा आर्यसमाज के प्रचार प्रसार को बढ़ाकर अधिक से अधिक जन समर्थन पाने का प्रयास करते रहे। बहुत सी संस्थाओं का जन्म हुआ और कई पत्र–पत्रिकाएं निकाली गयी। जिनके द्वारा लोगों मे वैदिक धर्म एवं वेदभावनाऐं जागरूक हों और कुरीतियाँ एवं कुप्रथाओं का विना"ा हो सके। सभी लोग सभ्य नागरिक बनकर सभ्य समाज तथा सुन्दर दे"ाों का निर्माण कर सकें।

मॉरी"ास में दक्षिण अफ्रीका, ब्रिटिस गुयाना, फिजी त्रिनिडाड तथा जमैका में आर्यसमाज से समबद्ध पत्र–पत्रिकाऐं

मॉरी"ास में प्रतिज्ञावध कुलिप्रथा के अनुसार सबसे पहले भारत से मजदूर मॉरी"ास भेजे गये फिर मॉरी"ास के बाद अन्य दे"ाों जैसे त्रिनिडाड, गुयाना आदि दे"ाों में भेजे गये। कुछ मजदूर हॉलेण्ड और फ्रांस के लिए भी भारत से भर्ती किए गये।

''प्रसिद्ध कुलीप्रथा के अधीन कुल मिलाकर जो मजदूर विभिन्न यूरोपीय यूनीयन के उपनिवे"ाों में भेजे गये, भारत से उनकी संख्या उन्नीस लाख के लगभग थी। सबसे अधिक मजदूर (तीन लाख इक्यावन हजार चार सौ एक) मॉरी"ास भेजे गये। उसके बाद दक्षिण अफ्रीका का नम्बर आता है जहाँ भेजे गये मजदूरों की संख्या (एक लाख उड़नचास हजार सात सौ इक्यानवैं) थी। ब्रिटिस

गुयाना में एक लाख उन्तीस हजार एक सौ इक्यासी, मलय स्टेट्स में एक लाख बहत्तर हजार दो सौ पैंसठ, फिजी में अड़तालीस हजार छः सौ चौदह, त्रिनिडाड में बयालीस हजार पांच सौ इक्यानवें तथा जमैका में पन्द्रह हजार एक सौ उन्हत्तर मजदूर प्रतिज्ञाबद्ध कर भेजे गये । 1

इन्ही सभी मजदूरों के संग भेड़ बकरियों की तरह व्यवहार किया जाता था। कुछ लोग रास्ते में आत्महत्या कर लेते थे। पांच–पांच साल के लिए खरीदकर उनसे मनोवांछित कार्य कराये जाते थे। समय पूरा होने के बाद वे लोग या तो वहीं रूक जाते थे या भारत आ जाते थे। अधिकतर बिहार, उत्तर प्रदे"ा, आन्ध्रप्रदे"ा, और तमिलनाडु के लोग इस प्रथा के अर्न्तगत गये थे। ये लोग मॉरी"ास, फिजी, ब्रिटिस गुयाना व अफ्रीका दे"ाों में जाकर बसे।

मॉरी"ास 1810 में अन्य राष्ट्रों के अधीन था। पहले फ्रांस का कब्जा था। सन् 1897 ई0 में भारत की सेना के बंगाल बटालियन के कुछ दस्ते मॉरी"ास भेजे गये उस समय बंगाल बटालियन में उत्तर प्रदे"ा, बिहार के कई सिपाही हुआ करते थे। भेजे गये सैनिकों में एक श्री भोलेनाथ तिवारी थे, जो आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द से भलीभांति परिचित व अनुयायी भी थे। अपने साथ सत्यार्थ प्रका"ा, संस्कार की प्रतियां भी साथ–साथ लेकर गये थे। 1902 में वह जब भारत वापस आये तो पुस्तकें मॉरी"ास छोड़ आये थे। उस समय मॉरी"ास में क्रि"चन मिसनरियों का पूर्ण प्रभुत्व था। वे हिन्दू धर्म, द"ान एवं संस्कृति की खिल्ली उड़ाया करते थे। मॉरी"ास में रहने वाले हिन्दुओं को यह अच्छा नहीं लगता था। लाला खेमराज, पण्डित राम प्रसाद ओझा, पण्डित मेघवर्ण आदि को मिसनरियों का यह व्यवाहर पसन्द नहीं था। उनके हाथ आर्यसमाज के कुछ संस्कार ग्रन्थ, सत्यार्थ प्रका"ा आदि हाथ लग गये। जिस कारण लोगों पर उनका व्यापक असर

पड़ा। 1903 में मॉरी"ास में आर्यसमाज की स्थापना हुई। इसमें खेमराज लाला, दलजीत लाल, जगमोहन गोपाल आदि पदाधिकारी थे। वे व्याप्त बुराइयों की ओर आकृष्ट हुए। और लाहौर से एक पुस्तकों का पार्सल मंगाया। पार्सल लाहौर से निकलने वाली 'आर्य–पत्रिका' का थां। फिर राम"ारण जी आर्य पत्रिका के ग्राहक बन गये और पुनः 1906 ई0 में आर्य समाज की स्थापना हुई।

डॉ0 मनिलाला नामक एंक प्रसिद्ध व्यक्ति मॉरी"ास पहुँचें। मॉरी"ास में लोगों की अवस्था उनसे देखी नहीं गई। जागरूकता की कमी के कारण उनमें एकता नहीं थी, उनका उत्पीड़न होता था और ऊपर से रूढ़िवादी सोच के कारण विकास रूका हुआ था। मॉरी"ास छोटा सा द्वीप है जिसका क्षेत्रफल 720 वर्गमील है। यहां पर 70 प्रति"ात से अधिक हिन्दू व शेष अन्य इस्लाम अनुयायी हैं। समाज सुधारकों ओर आर्य पुरोधाओं के पूर्ण समर्पण से 'आर्य–पत्रिका' नाम से एक पाक्षिक पत्र का आरम्भ हुआ। 2

'केरपिप' में भी आर्यसमाज की स्थापना का सुखद संदे"ा आर्यसमाज की सरजमी पर फैल गया। परिणामस्वरूप मॉरी"ास की राजधानी में 1911 ई0 को आर्यसमाज स्थापित हो गया। हिन्दी भाषीय वर्गों की संख्या बहुतायत होने कारण ''सन् 1912 ई0 में आर्यपत्रिका निकाली गयी। इसका संपादन लाला खेमराज ने हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में किया।'' 3

सन् 1925 ई0 में पण्डित रामलखन और पंण्डित वेणी माधव मॉरी"ास गये ओर आर्यसमाज के काम में जुट गये अब वहाँ कई आर्य विद्वान ईसाई मि"ानरियों को शास्त्रार्थ में पराजित कर सकते थे। सन् 1929 में 'आर्यवीर' तथा

सन् 1950 ई0 में 'आर्योदय' शीर्षक पत्र छपे। आर्यवीर में हिन्दी अंग्रेजी व फ्रेंच भाषाओं में लेख छपते थे।

सन् 1970 ई0 में 'तीरक जयन्ती' के अवसर पर महिला सम्मेलन कराया गया। लगभग 5 हजार महिलाएं कार्यक्रम में पहुंची। आर्यसमाज द्वारा महिलाओं, असहायों की सहायता, अनाथों का पालन–पोषण और दलितों के उद्धार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये गये।

मॉरी"ास का पूरा क्षेत्रफल भारत के एक बड़े जनपद से भी कम है, परन्तु वहाँ पर 300 से भी ज्वादा आर्यसमाज संस्थाऐं तथा अनेक ि"क्षण संस्थाऐं हैं। 'पोर्ट लुई' में आर्यसमाज ने अपने कार्यों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए विभिन्न समीतियों में बांट रखा है– ''अनाथालय समिति, जायदाद समिति, प्रेस समिति, विद्या समिति, डी0ए0बी0 कॉलेज समिति, वेदवाणी समिति, सरकारी स्कूल सहायक समिति, पुस्तकालय एवं प्रचार समिति आदि। 5

'फिजी' प्र"ांत महासागर के दक्षिण पि"चम भाग में भारत से लगभग 6000 किमी0 की दूरी पर स्थित है। इसकी राजधानी सूबा है। यह 300 छोटे द्वीप का समूह है।

यहाँ पर भी प्रतिज्ञाबद्ध कुली प्रथा का चलन था। जिस कारण प्रति वर्ष बहुत सी संख्या में स्त्री–पुरूष इधर–उधर हो जाते थे। ''सन् 1921 ई0 तक फिजी द्वीप समूह में निवास करने वालों की संख्या 68000 तक पहुंच गयी, जिसमें 58903 हिन्दू, 620 मुसलमान ओर शेष ईसाई थे। ये भारतीय प्रायः उत्तर प्रदे"ा के पूर्वी जिलों तथा बिहार के रहने वाले थे और इनकी भाषा हिन्दी थी।''7

यहां पर मंगल सिंह, बिहारी लाल, प्रताप सिंह और ननकु सुनार आदि के प्रयास से 27 दिसम्बर 1904 ई0 को आर्यसमाज की स्थापना की गई।

फिजी की राजधानी सूबा में सन् 1952 ई0 में पंण्डित अमीचंद ने डी0ए0बी0 स्कूल की स्थापना का प्रयास किया, जो सन् 1952 ई0 में सफल रहा। आर्यसमाज ने प्राकृतिक विपत्तियों के समय भी धन, समय, भोजन, कपड़ों आदि से सहयोग किया। सामाबूला आर्य कन्या पाठ"ाला में पारितोषिक वितरण समारोह में फिजी के गवर्नर, सर ''फलैचर' ने आर्यसमाज के इस लोकोपकारी कार्य का निम्नलिखित शब्दों में उल्लेख किया था– ''इस अवसर पर में उस सहायता के लिए जो गत फरवरी मास की प्रलयकारी बाढ़ के समय आप द्वारा प्रदान की गयी थी, आपके प्रति धन्यवाद प्रकट करता हूँ।'' 8

आर्यसमाज ने अपितु हिन्दू समाज को ही जागृत नहीं किया बल्कि मूल निवासियों को भी ि"ाक्षित किया। आर्यसमाज की प्रगति के लिए ''1926 ई0 में पंण्डित श्री कृष्ण शर्मा द्वारा ''वैदिक संदे"ा'' नामक एक पत्र का प्रका"ान आरम्भ किया गया। पंण्डित विष्णुदेव इसके संपादक थे। इस पत्र के लिए छोटा सा प्रेस भी खोला गया। वैदिक संदे"ा द्वारा फिजी में वैदिक धर्म की जड़ को सुदृढ़ करने में बहुत सहायता मिली। वैदिक संदे"ा नामक पत्रिका सबसे पहले 1921 ई0 में गुरूकुल कांगड़ी से प्रका"ित होती थीं।'' 9

दक्षिण अफ्रिका में स्वामी भवानीदयाल सन्यासी जब पधारे, तो हिन्दू जनमानस में एक नयी क्रान्ति आ गयी। इस अवसर पर एक हिन्दू परिसर का गठन किया गया। सभी हिन्दू मिलकर कार्य करें इस विचार को ग्रहण करके ही अर्द्ध"ताब्दी आयोजित की गयी। और यह प्रस्ताव पास किया कि हिन्दू महासभा

में नवजीवन का संचार किया जाए, जिससे बिना भेदभाव के सभी वर्गो का विकास हो सके। सन् 1916 ई0 में पंण्डित लेखराम की स्मृति में डरबन से 'धर्मवीर' नामक एक हिन्दी साप्ताहिक प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशक उर्दू के एक अच्छे जानकार रत्नाराम मल्ला नामक सज्जन थे, परन्तु वह इस पत्र को हिन्दी में नहीं लिख सके। अतः सन् 1917 ई0 में इस पत्र का प्रकाशन पंण्डित भवानीदयाल सन्यासी को सौंप दिया गया।''9 इसके बाद पंण्डित भवानीदयाल संन्यासी ने अपनी धर्म पत्नि श्री मति जगरानी के विशेष आग्रह पर 'हिन्दी' नामक एक मासिक पत्रिका निकाली धीरे–धीरे लोग आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित होने लगे और उपदेशों को हदयगंत करने लगे थे।

सन् 1950 ई0 में आर्यप्रतिनिधि सभा को स्थापित हुए 25 वर्ष पूरे हो गये थे। फरवरी सन् 1950 ई0 में रजत जंयती मनायी गयी। इसी क्रम में पंण्डित गंगाा प्रसाद उपाध्याय जो कि प्रसिद्ध वैदिक विद्वान थे। और उनके व्याख्यानों ने लोगों में तीव्र उत्कंठा जगायी जिससे लोग वैदिक धर्म के प्रति उन्मुख हो उठे। ''आर्यप्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका का 'आर्यमित्र' नामक एक मुखपत्र भी निकला था।''10 वर्तमान में संन्देह नहीं कि जिस बीज का वर्णन किया गया था, वह एक विशाल वृक्ष का आकार ले चुका हैं और इसकी शाखांएं पूरे देश में फैली हुई हैं। वेद सभा आर्यसमाज की एक ओर प्रमुख सभा है।

इस सभा द्वारा अनाथाश्रम और हिन्दी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गयी। वेद धर्म सभा हर सप्ताह सत्संग का आयोजन करती है व हिन्दी पाठशाला चलाकर वैदिक धर्म का प्रचार भी करती हैं। दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज का भविष्य उज्जवल है।

PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 2, ISSUE 3

पूर्वी अफ्रीका में आर्यसमाज का प्रचार प्रसार एवं प्रमुख पत्र–पत्रिकाएं–

जिस प्रकार भारत ईष्ट इण्डिया कम्पनी के आधीन था और सन् 1857 के बाद ब्रिटेन का सीधा शासन स्थापित हुआ, ठीक उसी प्रकार ब्रिंटेन के अधीन शोषण की चक्की में पिस रहा था।

अफ्रीका में अधिकतर लोग मजदूर कारीगर, ि"ाल्पी थे। जो भारत के गुजरात एवं पंजाब प्राप्त से आये थे। इनमें से कुछ प्रतिज्ञाबद्ध मजदूरों की तुलना में अच्छे और वे प्रायः बाबू कारीगर के रूप में कार्य करते थे। वहां पर भारतीयों ने अपने कौ"ाल और कर्मठता से अपने पैर जमाना शुरू किया। अ्फ्रीका में धार्मिक कार्यों को कोई जगह नहीं थी, जो उन्हे हिन्दू धर्म या संस्कृति से सम्बन्धित कोई बात बता सके। वहाँ ईसाई मि"ानरी सक्रिय थे।

''अंग्रेजों ने भारत के आलावा कीनिया, तंजानिया, युगाण्डा और मैजाम्बिक में से पहले तीन राज्यों में ''युगाण्डा 14 अक्टूबर 1962 के दिन स्वतंत्र हुआ, कीनिया 12 दिसम्बर 1936 ई0 को तथा तंजानिया 26 अप्रैल 1964 ई0 को।'' 13

कीनिया का काम क्षेत्र वर्तमान समय में 224962 वर्गमील है जनसंख्या 31927000 व्यक्ति हैं। राजधानी नैरोबी है। भाषा अंग्रेजी स्वेहिली एवं अन्य स्थानीय भाषाएं हैं। यहाँ की साक्षरता 82.4 प्रति"ात हैं और मुख्य 'ईसाई' तथा 'इस्लाम' है। मुद्रा 'ि"ालिंग तथा प्रमुख तथा प्रमुख नगर नैरोबी, मोमबासा, किसम, नाकरू आदि है। कॉफी, शी"ा, चाय, कपास, नाकरू आदि है। कॉफी, शी"ा, चाय, कपास आदि प्रमुख उत्पादन हैं''। 13

भारत के कुछ लोगों ने भी फिजी में बसे लोगों को आर्यसमाज से परिचय कराया। 15 जुलाई सन् 1903 को नैरोबी में श्री जय गोपाल जी के घर पर 45 लोग एकत्रित हुए और आर्यसमाज की नींव डाल दी गयी। आर्यसमाज के संस्थापक श्री बद्रीनाथलाल, श्री वसीरचंद्र और गने"ीलाल प्रमुख थे। मुसलमानों ने इसके विपरीत ''अंजुमने–इस्लाम' नामक संस्था के माध्यम से आर्यसमाज पर विष–वमन किया करते थे। परन्तु आर्यसमाज में श्री "ालिग्राम शर्मा और बिहारीलाल ने मुसलतानों को मुंहतोड़ उत्तर दिया। आर्यसमाज की निरंतर वृद्वि होती चली गयी। सन् 1905 से 1909 तक भाई परमानन्द एक श्रेष्ठ विद्वान एवं पूर्ण समर्पित आर्य समाजी थे। स्कूली अध्ययन के प्रारम्भ से ही भाई परमानन्द का झुकाब आर्यसमाज की तरफ बचपन से ही हो गया था। ''माँ की मृत्यु के उपरान्त पण्डितों द्वारा कराए गये पौराणिक कर्मकाण्डों से आप इतने खिन्न हो उठे कि आपने चकवाल में आर्यसमाज की स्थापना ही कर डालीं। स्कूल के बाद उनका सारा समय आर्य समाज में लगने लगा तथा उनके मन में यह विचार प्रबल हो गया कि हिन्दू समाज को बचाने वाली आर्य समाजी विचारधारा ही प्रबल हो सकती है।'' 14

''परमानन्द जी उग्रराष्ट्र वादी विचारों के पोषक थे। सरकार उनकी गतिविधियों पर पावन्दी लगाना चाह रही थी। लाहौर के डी0ए0वी0 कॉलेज में अध्ययन और आर्यसमाज का प्रचार पूरी लगन से करते हुए सन् 1908 ई0 में उन्होंने दे"ावासियों को ललकारा था– यदि आर्यसमाज अपने लिए स्थान बनाना चाहता हैं तो हमें भारत में ईसाईयत की उन्नति को समाप्त कर देना चाहिए। इसका एक ही तरीका है कि विभिन्न राज्यों के राजा और भारत के अन्य

प्रतिष्ठित लोग अपने लड़कों को आर्यसमाज की ओर से मि"ानरियों के रूप में समस्त दे"ाों में भेजें।''15

सन् 1904 ई0 में बाबू वजीरबंद ठेकेदार के घर पर सम्पन्न आर्यसमाज नैरोबी के प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर के लिए धन की अपील की गयी। अनेक सदस्यों ने आधे मास का वेतन देकर मन्दिर के निर्माण में भागीदारी की।

छः साल तक आर्यसमाज की गतिविधियाँ इस मन्दिर से जारी रहीं ''सन् 1912 ई0 में बड़ौदा महाराज के भाई श्री सम्पतराव जी पूर्वी अफ्रीका आए और उनके कर कमलो से स्थायी आर्यसमाज भवन का शिलान्यास कराया गया। इस भवन में छः सौ से अधिक लोग आराम से बैठ सकते थे। पाठ"ालाओं की स्थापना हुई हिन्दू त्यौहारों और उत्सवों को सामूहिक रूप से मनाया जाने लगा। हिन्दुओं में नवचेतना के साथ पूरे केन्या मे आर्यसमाज का प्रभुत्व स्थापित हुआ। आर्य प्रतिनिधित्व सभा पूर्वी अफ्रीका (कीनिया) का मासिक मुख पत्र 'प्रतिनिधि' नाम से छपने लगा। इसी क्रम में आर्यसमाज नैरोबी ने सन् 1921 में 'आर्यवीर' नामक पत्र निकाला था।'' 16

''तंजानियां जो कि पूर्वी अफ्रीका का एक राज्य है जिसमें आर्यसमाज की गातिविधियाँ अबाध रूप से चलीं। तंजानियां की राजधानी डोडोमा, क्षेत्रफल 36,4900 वर्गमील तथा जनसंख्या 36977000 व्यक्ति हैं। भाषा स्वेहिली तथा अंग्रेजी हैं, साक्षरता 75.1 प्रति"ात तथा धर्म ईसाई और इस्लाम हैं। गन्ना, कपास, कॉफी, सीसल, चाय आदि प्रमुख उत्पादन हैं तथा ब्रिटे, जर्मनी, अमेरिका, डेनमार्क आदि प्रमुख व्यापार सहयोगी दे"ा हैं।''17

''पूर्वी अफ्रीका का एक और राज्य मोजाम्बिक उसमें भी आर्यसमाज की गातिविधियाँ रहीं। 1975 ई0 में यह पुर्तगाल के प्रभाव से मुक्त हुआ। बाद में मोजाम्बिक गृहयुद्ध, सूखे तथा बाढ़ की विभीषिका से सूझता रहा। इस कारण यह अत्यन्त गरीब दे"ा है। ''मोजाम्बिक की राजधानी का नाम 'मप्यूटो' है। क्षेत्रफल 309495 वर्ग मी0 है। जनसंख्या 18833000 व्यक्ति हैं। भाषा पुर्तगाली और बंटू है। साक्षरता 44 प्रति"ात है, धर्म इस्लाम तथा ईसाई हैं तथा प्रमुख शहर–मपूता, वेमरा, नामपुला हैं काजू, चीनी, कपास, मक्का, केला, चावल , नरियल आदि प्रमुख फसलें हैं।''18

मोजाम्बिक में श्री संन्यासी जी ने अपनी असाधारण प्रतिभा और व्यक्ति के बलबूते पर मोजाम्बिक के हिन्दू समाज में सुधार करवाकर और वेदविहित तथ्यों के स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए मोजाम्बिक के हिन्दुओं में अपनी वर्ग शंकर संतानों को अपनाने का आह्वान स्वयं प्रेरित किया। सन् 1937 ई0 में दीपावली के शुभ अवसर पर 'लारेंसो मार्किवंस' नगर में 'भारत समाज' ने वेद मंदिर की आधारि"ाला रखी और एक वर्ष प"चात् मन्दिर बनकर तैयार हो गया।

मोजाम्बिक पर पुर्तगालियों का आधिपत्य था। सन् 1962 ई0 में गोवा के प्र"न पर भारत व पुर्तगालियों के बीच से बन्धों में ि"ाथिलता आ गयी। फलस्वरूप पुर्तगाल सरकार भारत एवं भारतवासियों से नराज हो गयी।

इस स्थिति में भारत समाज का कार्य बिल्कुल ठप्प हो गया। लेकिन मोजाम्बिक का एक कार्य वर्ण शंकर सन्तान को अपनाना और मलगाहों गये लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में शमिल करना नि"चत ही दु"कर कार्य था। पर आर्य संन्यासियों ने इसे भी कर दिखाया। इस प्रकार अफ्रीका जैसे दुर्गम महाद्वीप पर

पुहंचकर और आर्यसमाज का झण्डा फहराकर आर्यसमाज के साथ–साथ स्वामी दयानन्द और भारत वर्ष का मस्तक ऊँचा किया, यह महर्षि दयानन्द का प्रभाव था।

अमेरिका, इग्लैण्ड, सूरीनाम, गोयाना, आदि में आर्य समाज से सम्बद्ध पत्रकारिता।

सूरीनाम और गुयाना में भाई परमानंद जी ने अपने अद्भुत भाषण कला से आर्य धर्म एवं ि"ाक्षाओं का वयापक प्रचार एवं प्रसार किया। उनके विचार हिन्दू संस्कृति और सभ्यता को सदा उन्नत स्तर पर रखने वाले होते थे।

''हिन्द भूमण्डल का सबसे पुराना राष्ट्र है। उनके धर्मग्रन्थ वि"व के सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। आधुनिक यूरोपीय राष्ट्र प्राचीन हिन्दुओं अथवा आर्यों के ही व"ाज हैं। प्राचीन काल में सभी बड़े राष्ट्र अपनी सभ्यता तथा वि"िाष्ट राष्ट्रीय चरित्र खो बैठे थे। .....किन्तु वि"व के प्रारम्भ से हमारा राष्ट्र केवल ऐसा है जो इस विषय में अपवाद सिद्ध हुआ है । जो अभी भी जीवित अवस्था में है।..... निसंदेह किसी 'रहस्यमयी शक्ति' ने अथवा किसी अन्य वस्तु ने हमें नष्ट होने बचा लिया है। यात्नाऐं, सामूहिक हत्याएं, भयंकर नरसंहार अथवा रक्तपाद, भयावह युद्ध, हमने क्या–क्या सहन नहीं किया है। फिर भी हम जीवित हैं।'' 19

आर्य समाज से प्रेरित/संपादित पत्र–पत्रिकाओं एवं संयासियों संस्थाओं ने दे"ा–विदे"ा में आर्य समाज के माध्यम से प्रतिज्ञाबद्ध कुली व्यवस्था, शोषण, धर्मान्तरण आदि को दूर करने में महति योगदान दिया। जिससे समस्त संसार में आर्य समाज, स्वामी दयानन्द सरस्वती व भारत का मस्तक ऊँचा हुआ। भविष्य में

भी आर्य समाज व स्वामी दयानन्द सरस्वती के मार्गद"ान में भारत पृथ्वी का मार्गद"ाक बना रह सकता है।

संदर्भः

01. डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार आर्यसमाज का द्वितीय भाग पृ0–630
02. डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार आर्य समाज का द्वितीय भाग, पृ0–630
03. डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार आर्य समाज का पॉचवा भाग, पृ0–453
04. डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार आर्य समाज का पॉचवा भाग, पृ0–454
05. डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार आर्यसमाज का द्वितीय भाग, पृ0–647
06. उपर्युक्त पृ0–649
07. उपर्युक्त पृ0–659
08. संजय वर्मा आर्य समाज की विज्ञान पत्रकारिता, पृ0–101
09. डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकारः आर्य समाज का इतिहास पॉचवा भाग, पृ0–453
10. उपर्युक्त पृ0–454
11. डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकारः आर्य समाज का इतिहास द्वितीय भाग, पृ0–692
12. जागरण वार्षिकी–2005 पृ0–811
13. डॉ0ए0के0 रूस्तमी/डॉ0 पी0सी0 जैनः आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतक पृ–235
14. डॉ0ए0बी0 कॉलेज को प्रबनध समीति की बैठक में छिपे गये भाषण के अं"ा सन 1908 ई0
15. डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकारः आर्य समाज का इतिहास पॉचवा भाग, पृ0–453
16. जागरण वार्षिकी–2005 पृ0–817
17. जागरण वार्षिकी–2005 पृ0–817
18. हिन्दू संगठन (अनूदित–लालचंद धवन लाहौर, दि0 सैन्ट्रल युवक सभा 1936)